अध्याय 21

आगे की यात्रा

होर पहाड़ से इस्राएलियों ने मोआब के मैदान की ओर यात्रा आरंभ की। इस अध्याय में सूचीबद्ध तीन सेनाओं पर उन्होंने सफलतापूर्वक विजय प्राप्त की। संभवतः ये घटनाएं इस पुस्तक की सर्वोत्तम घटनाएं थीं - लेकिन यह पुस्तक अन्य घटनाओं के बारे में भी बताती है, जब लोग कुड़कुड़ाए और उनको इसके लिए दण्डित भी किया गया था। तीन भजन इस वृतांत की पटकथा में जान डालते हैं।

पहली विजय अराद के कनानी राजा पर थी (21:1-3)। इसके पश्चात, पानी एवं अच्छे भोजन की कमी के कारण लोग कुड़कुड़ाने लगे थे और परमेश्वर ने "विषवाले साँप" भेजकर उन्हें दण्डित किया। जब उन्होंने अपने पापों से पश्चाताप किया तो परमेश्वर ने इससे बचने के लिए पीतल का साँप बनवाकर खम्भे पर लटकवा दिया। जो भी उस साँप की ओर देखेगा वह चंगा हो जाएगा (21:4-9)। जब इस्राएलियों ने अपनी यात्रा जारी रखी तो वे कनान की ओर यात्रा करते हुए कई स्थानों में से होकर गुजरे (21:10-20)। जब अमोरियों के राजा सीहोन ने उन्हें अपने देश में से होकर जाने से रोका और उन पर चढ़ाई की, तो परमेश्वर के लोगों ने उन पर बड़ी विजय प्राप्त की (21:21-32)। इस अध्याय के अंतिम भाग में, इस्राएलियों ने बासान के राजा, ओग को हराया (21:33-35)।

अराद के राजा का सामना (21:1-3)

[1]तब अराद का कनानी राजा, जो दक्खिन देश में रहता था, यह सुनकर कि जिस मार्ग से वे भेदिये आए थे उसी मार्ग से अब इस्राएली आ रहे हैं, इस्राएल से लड़ा, और उनमें से कितनों को बन्धुआ कर लिया। [2]तब इस्राएलियों ने यहोवा से यह कहकर मन्नत मानी, "यदि तू सचमुच उन लोगों को हमारे वश में कर दे, तो हम उनके नगरों का सत्यानाश कर देंगे।" [3]इस्राएल की यह बात सुनकर यहोवा ने कनानियों को उनके वश में कर दिया; अतः उन्होंने उनके नगरों समेत उनका भी सत्यानाश किया; इस से उस स्थान का नाम होर्मा रखा गया।

आयत 1. जब इस्राएली लोग होर पहाड़ पर ही थे (21:4), तो **अराद का कनानी राजा, जो दक्खिन देश** [नेगेव] **में रहता था, ... इस्राएलियों से लड़ा, और उनमें से कितनों को** उसने **बन्धुआ कर लिया**। "नेगेव" का अर्थ दक्खिन देश है और यह पलिस्तीन के दक्षिणी भाग की मरुस्थल को संदर्भित करता है। "अराद," मृत

सागर के दक्षिणी सिरे से लगभग पंद्रह मील की दूरी पर नेगेव के पूर्व में स्थित एक नगर था।

अराद के राजा ने सुना कि अथारीम के **मार्ग से अब इस्राएली आ रहे हैं**। KJV में लिखा है "by the way of the spies," ("भेदिये के मार्ग से") जो यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि इब्रानी भाषा में प्रयुक्त "अथारीम" (הָאֲתָרִים, *हाथारीम)* को "भेदिये" (הַתָּרִים, *हाथारीम)* समझा जाना चाहिए। इस मामले में, यह उपाधि उस मार्ग की ओर संकेत करती है, जब बारह भेदियों ने इस देश की छानबीन करने के लिए लिया था (13:21, 22)। यद्यपि, अत्याधुनिक अनुवाद "अथारीम" को एक स्थान के नाम के रूप में दर्शाते हैं।[1]

आयत 2. तब इस्राएलियों ने यह मन्नत मानी कि यदि परमेश्वर उनको इन शत्रुओं पर विजय देता है तो वे **उनके नगरों को पूरी तरह सत्यानाश कर देंगे**। उनकी मन्नतों में "कनानियों के नगरों में एक प्रकार का अभिशाप था … जिसमें उनके नगरों को पूरी तरह सत्यानाश करना संलिप्त था, जिसमें लूट के किसी भी माल को विजेताओं में नहीं बांटा जाना चाहिए था।"[2] पूरी तरह से सत्यानाश करने के लिए इब्रानी शब्द חֵרֶם *(ख़ारम)* का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ "नाश करने के लिए समर्पित" है।

आयत 3. परमेश्वर ने उनका निवेदन **सुना** और इस परिणाम के साथ कि इस्राएल **उनको और उनके नगरों को पूरी तरह सत्यानाश कर देंगे, कनानियों को उनके वश में कर दिया**। इस घटना के कारण उस स्थान का नाम **होर्मा** (חָרְמָה) पड़ा, जिसका अर्थ "सत्यानाश करने के लिए समर्पित।" इस विजय के साथ ही, इस्राएलियों ने "होर्मा" में लगभग चालीस वर्ष पूर्व कनानियों और अमालेकियों से अपनी हार का बदला चुकाया, जब लोगों ने परमेश्वर की सहायता बिना देश पर कब्जा करना चाहा था (14:44, 45)।

क्यों इस्राएलियों ने कनानियों पर आक्रमण किया और उन्हें पूरी तरह सत्यानाश करने की मन्नत मानी, जबकि उन्होंने पहले एदोमियों से लड़ने से इनकार किया था? इस प्रश्न के तीन संभावित उत्तर हैं: (1) एदोमी, इस्राएल के "भाई" थे, क्योंकि दोनों जाति इसहाक के वंशज थे; लेकिन कनानी नहीं थे। (2) वास्तव में कनानियों ने इस्राएलियों पर आक्रमण किया था, जबकि एदोमियों ने उन पर आक्रमण करने की धमकी दी थी। इस्राएली आक्रामक नहीं थे; एक मायने में जब कनानी उन पर आक्रमण कर रहे थे तो वे केवल अपना बचाव कर रहे थे। (3) अराद और होर्मा, इस्राएलियों को परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा में दिए जाने वाले देश के अंतर्गत आता था, जबकि एदोम प्रतिज्ञा के देश से बाहर था।

पाप और साँप (21:4-9)

[4]फिर उन्होंने होर पहाड़ से कूच करके लाल समुद्र का मार्ग लिया कि एदोम देश से बाहर बाहर घूमकर जाएँ; और लोगों का मन मार्ग के कारण बहुत व्याकुल हो गया। [5]इसलिये वे परमेश्वर के विरुद्ध बात करने लगे, और मूसा से कहा, "तुम

लोग हम को मिस्र से जंगल में मरने के लिये क्यों ले आए हो? यहाँ न तो रोटी है, और न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दु:खित हैं।" [6]अतः यहोवा ने उन लोगों में तेज विषवाले* साँप भेजे, जो उनको डसने लगे, और बहुत से इस्राएली मर गए। [7]तब लोग मूसा के पास जाकर कहने लगे, "हम ने पाप किया है क्योंकि हम ने यहोवा के और तेरे विरुद्ध बातें की हैं; यहोवा से प्रार्थना कर कि वह साँपों को हम से दूर करे।" तब मूसा ने उनके लिये प्रार्थना की। [8]यहोवा ने मूसा से कहा, "एक तेज विषवाले साँप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका; तब जो साँप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा।" [9]अतः मूसा ने पीतल का एक साँप बनवाकर खम्भे पर लटकाया; तब साँप के डसे हुओं में से जिस जिस ने उस पीतल के साँप की ओर देखा वह जीवित बच गया।

आयत 4. इस्राएलियों की यात्रा के अगले पड़ाव की उद्घोषणा इस आयत में की गई है। क्योंकि उनको एदोम देश से होकर जाने से मना किया गया था, तो उत्तर या उत्तर-पूर्व से होते हुए कनान की ओर जाने के बजाय, भ्रमणकारियों ने **लाल समुद्र का मार्ग लिया कि एदोम देश से बाहर बाहर घूमकर जाएँ**। अर्थात् उन्होंने अकाबा की खाड़ी, लाल समुद्र की पूर्वी शाखा, का मार्ग लिया। (स्वेज की खाड़ी पश्चिमी शाखा है।) इस मार्ग से होते हुए, वे कनान में दक्षिण के बजाय पूर्व से प्रवेश करते, जैसे कि उन्होंने पहले भी भेदियों के बुरे ब्योरे सुनके योजना बनाई थी (अध्याय 13; 14)। संभवतः इस चक्करदार मार्ग का अनुसरण करने के कारण **लोगों का मन बहुत व्याकुल हो गया था**।

आयत 5. इस्राएलियों ने **परमेश्वर और मूसा के विरूद्ध बातें की**, वे फिर से उकता देने वाले भोजन और पानी की कमी की शिकायत करने लगे। उन्होंने परिस्थिति की अतिशयोक्ति की और यह कहकर अपने आपका विरोधाभास करने लगे, **"तुम लोग हम को मिस्र से जंगल में मरने के लिये क्यों ले आए हो? यहाँ न तो रोटी है, और न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दु: खित हैं।"**

आयत 6. इस बार परमेश्वर ने उनके शिकायत के प्रति कादेश से भिन्न प्रतिक्रिया दिखाई (अध्याय 20)। उस स्थान पर, उसने उनकी इच्छा के अनुसार उनको पानी उपलब्ध कराया; लेकिन इस स्थान पर उसने **तेज विषवाले साँप भेजे, जो उनको डसने लगे, और बहुत से इस्राएली मर गए**। अंग्रेजी में इन साँपों को "अग्निमय साँप," उनके लाल रंग के कारण कहा गया होगा। इससे भी अधिक संभावना यह है कि उनका काटना अग्नि के समान था और अग्नि के समान उनके काटे का दाग दिखता था। रॉय गेन ने साँपों को "अग्निमय" (विषैला) इसलिए समझा क्योंकि उनका विष अग्नि के समान जान पड़ता था और यह स्पष्ट किया कि इस अवसर पर परमेश्वर ने लोगों को दण्डित करने के लिए अग्नि का प्रयोग किया था।[3] NIV और REB में इस वाक्यांश का अनुवाद "venomous snakes" (जहरीले साँप) किया गया है। अन्य अनुवादों में "poisonous serpents" (विषैला साँप) (NRSV) या "poisonous snakes" (विषैला साँप) (CEV) किया गया है। NAB में "अग्निमय" (שָׂרָף, *सराफ)* का अनुवाद नहीं किया गया है जो यह कहता है, "the

Lord sent among the people saraph serpents" (यहोवा ने लोगों के बीच साराप साँप भेजे)।

इस बार परमेश्वर ने भिन्न प्रकार से प्रतिक्रिया क्यों की? यहोवा "क्रोध करने में धीमा है" (निर्गमन 34:6), लेकिन कभी-कभी धीरज टूट जाता है। परिणामस्वरूप, निरंतर पाप को क्षमा करने के बजाय, उसको इसे दण्डित भी करना पड़ता है (निर्गमन 34:7)। इस्राएलियों को शिकायत न करना सीखना चाहिए था। चूँकि उन्होंने ऐसा नहीं सीखा, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें "पाप की मजदूरी" (रोम. 6:23) के बारे में जबरदस्ती सिखाया।

आयत 7. परमेश्वर द्वारा अपने भयानक पाप का परिणाम सीखने के पश्चात, **लोग मूसा के पास जाकर कहने लगे, "हम ने पाप किया है क्योंकि हम ने यहोवा के और तेरे विरुद्ध बातें की हैं; यहोवा से प्रार्थना कर कि वह साँपों को हम से दूर करे।"** मिस्र छोड़ने के बाद कई पाप करने के पश्चात, इस्राएलियों ने कुछ भिन्न किया: उन्होंने अपना पाप मान लिया! क्योंकि यह कहना कि "हमने पाप किया है" उनके आत्मिक बढ़ोतरी को दर्शाता है।

न केवल उन्होंने अच्छी बात कही, बल्कि उन्होंने यह बात सही व्यक्ति से भी कही: परमेश्वर का प्रतिनिधि और उनके शिकायत का लगातार केन्द्र रहने वाले, मूसा से कहा। यह उसका बड़प्पन है कि मूसा ने उसके प्रति उनके व्यक्तिगत हमला को अपने मन में नहीं ठाना, बल्कि उसने **उनकी ओर से** परमेश्वर से **विनती** किया (देखें 12:3, 13)।

आयत 8. परमेश्वर ने अनुग्रहित होकर इस निवेदन के प्रति प्रतिक्रिया दिखाई और उनकी चंगाई का साधन उपलब्ध कराया। उसने मूसा को **एक तेज विषवाले** [जलते हुए] **साँप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटकाने का आदेश दिया।** जो उस पर दृष्टि करेंगे वे साँप के काटने के प्रभाव से बच जाएंगे।

आयत 9. मूसा ने पीतल का एक साँप बनाकर खम्भे पर लटकाने की आज्ञा मानी। "पीतल" (נְחֹשֶׁת, *नेखोसेत)* और "साँप" (נָחָשׁ, *नाहास)* के लिए प्रयोग किए गए इब्रानी शब्द का उच्चारण एक जैसा ही है जो शब्दों का खेल है। "पीतल" के लिए प्रयोग किए शब्द का अनुवाद "तांबा" भी किया जा सकता है।[4]

पीतल का साँप बनाने का कार्य समाप्त होने के बाद, उनमें से जिस-जिसको विषैले साँपों ने काटा था, जब उन्होंने उस **साँप की ओर देखा**, वे **जीवित बच गए।** यद्यपि आधुनिक पाठकों को साँप का चित्र अटपटा सा जान पड़ता है, लेकिन जिस संसार में इस्राएली लोग रहते थे उसमें यह कोई विदेशी विचार धारा नहीं था। आर. डेनिस कोले ने कहा कि इस प्रकार की परंपरा में "व्याधि के स्रोत के मन्नत रूप" का प्रयोग व्याधि की तोड़ के लिए किया जाता था (देखें 1 शमूएल 5:6; 6:4, 5)।[5] यह भी देखा गया है कि मिस्री लोग साँप काटने से बचने के लिए साँप का ताबीज़ पहनते थे।[6] यद्यपि, इस विषय पर मूर्तिपूजकों का अभ्यास और इस्राएलियों ने इस अवसर पर जो किया, उसके बीच भिन्न करना अनिवार्य है: *परमेश्वर* ने इस्राएलियों को साँप की ओर देखने की *आज्ञा दी थी* और *उसके सामर्थ्य* के द्वारा वे चंगे हुए थे।

सदियों तक इस्राएलियों ने पीतल के साँप को संजोए रखा, लेकिन अंततः यह आराधना का विषय बन गया था। इस कारण, यह यहेजकेल के दिनों में नष्ट किया गया। यह "नेहूस्तान" (נְחֻשְׁתָּן) कहा गया था, जो "पीतल" और "साँप" के लिए प्रयोग किए गए इब्रानी शब्द जैसा ही है (2 राजा 18:4)।

मोआब के मैदान के मार्ग में पड़ने वाले स्थान (21:10-20)

[10]फिर इस्राएलियों ने कूच करके ओबोत में डेरे डाले। [11]और ओबोत से कूच करके अबारीम नामक डीहों में डेरे डाले, जो पूरब की ओर मोआब के सामने के जंगल में है। [12]वहाँ से कूच करके उन्होंने जेरेद नामक नाले में डेरे डाले। [13]वहाँ से कूच करके उन्होंने अर्नोन नदी, जो जंगल में बहती और एमोरियों के देश से निकलती है, उसकी परली ओर डेरे खड़े किए; क्योंकि अर्नोन मोआबियों और एमोरियों के बीच होकर मोआब देश की सीमा ठहरी है। [14]इस कारण यहोवा के संग्राम नामक पुस्तक में इस प्रकार लिखा है: "सूपा में बाहेब, और अर्नोन की घाटी [15]और उन घाटियों की ढलान जो आर नामक नगर की ओर है, और जो मोआब की सीमा पर है।" [16]फिर वहाँ से कूच करके वे बैर तक गए; वहाँ वही कुआँ है जिसके विषय में यहोवा ने मूसा से कहा था, "उन लोगों को इकट्ठा कर, और मैं पानी दूँगा।" [17]उस समय इस्राएल ने यह गीत गाया: "हे कुएँ उमड़ आ, उस कुएँ के विषय में गाओ! [18]जिसको हाकिमों ने खोदा, और इस्राएल के रईसों ने अपने सोटों और लाठियों से खोद लिया।" फिर वे जंगल से मत्ताना को, [19]और मत्ताना से नहलीएल को, और नहलीएल से बामोत को, [20]और बामोत से कूच करके उस तराई तक जो मोआब के मैदान में है, और पिसगा के उस सिरे तक भी जो यशीमोन की ओर झुका है पहुँच गए।

आयत 10. मूसा ने उन स्थानों की सूची प्रस्तुत की है जहाँ-जहाँ इस्राएलियों ने मोआब की ओर यात्रा करते हुए डेरा डाला था। यह विस्तृत सूची नहीं है। संभवतः लेखक का यह उद्देश्य था कि वह पाठकों को धीमे से यरदन के पूर्व की ओर ले जाए।

आयत 4 के अनुसार, इस्राएली लोगों ने "होर पहाड़ से कूच करके लाल समुद्र का मार्ग लिया कि एदोम देश से बाहर-बाहर घूमकर जाएँ।" जबकि इस "मार्ग" या "सड़क" से जो अकाबा की खाड़ी - विशेषकर एलत और एस्योनगेबेर (व्यव. 2:8) की ओर जाती है - पूर्व की ओर मुड़ने से पहले वे लोग कितनी दूरी तक दक्षिण की ओर गए, अनिश्चित है।

प्रथम स्थान जहाँ इस्राएलियों ने डेरा किया वह **ओबोत** है, जबकि, गिनती 33:41-43 में, इस स्थान का वर्णन सलमोना और पुनोन से पहले किया गया है। सालमोना और ओबोत का वास्तविक स्थान निर्धारण करना अनिश्चित है। यद्यपि, आमतौर पर पुनोन का संबंध वर्तमान जोर्डन के फैनान से किया जाता है। यदि यह पहचान ठीक है तो ओबोत, फैनान और ज़ेरेद नाम नाले के बीच रहा होगा। ओबोत

का अर्थ "पानी रखने का चमड़े का थैला" है।

आयत 11. ओबोत से कूच करके इस्राएलियों ने **अबारीम नाम डीहों में डेरे डाले, जो पूरब की ओर मोआब के सामने के जंगल में है**। यह गिनती 33:44 से अधिक स्पष्ट है जो यह बताता है कि यह "मोआब की सीमा" पर स्थित था। इस स्थान का निश्चित रूप से स्थान निर्धारण करना कठिन है। फिर भी, पूर्वी दिशा यह दर्शाती है कि इस्राएली लोग एदोमियों के समान, मोआबियों से संघर्ष नहीं करना चाहते थे। अब्राहम के भतीजे, लूत के वंशज होने के कारण, मोआब के लोग भी इस्राएली लोगों से संबंधित थे (उत्पत्ति 19:30-38)।

आयत 12. इसके पश्चात इस्राएलियों ने **ज़ेरेद नाम नाले** में डेरा डाला। "नाला" सूखी नदी है जिसमें केवल बरसातों में ही पानी बहता है। ज़ेरेद का नाला मृत सागर के दक्षिणी भाग में स्थित है जो एदोम और मोआब के बीच सीमा रेखा तय करता है। व्यवस्थाविवरण 2:14 के अनुसार "ज़ेरेद का नाला" पार करना इस्राएलियों का जंगल भ्रमण की अंतिम घड़ी की ओर संकेत करता है।

आयत 13. ज़ेरेद के नाले से कूच करके उन्होंने **अर्नोन नदी** की दूसरी ओर डेरा डाला। अर्नोन नदी, मृत सागर के मध्य के थोड़ा ऊपर पूर्व दिशा की ओर बहती थी। इस दौरान, अर्नोन नदी **मोआब देश की उत्तरी और एमोरियों के देश की दक्षिणी सीमा रेखा** का कार्य करती थी। एमोरी देश का विस्तार अर्नोन नदी से पचास मील उत्तर से याबोक नाले तक फैला हुआ था।

आयतें 14, 15. गिनती 21:10-20 में वर्णित इस्राएलियों की यात्रा को दो भजनों के द्वारा रेखांकित किया गया है। 21:14, 15 में वर्णित पहली भजन को इब्रानी भाषा से अनुवाद करना कठिन है, संभवतः ऐसा इसलिए है क्योंकि मूल लेख की एक क्रिया को कालान्तर की पाण्डुलिपि से असावधानी से छोड़ दिया गया है। यह "Waheb in Suphah …" के साथ प्रारंभ होता है। मूल रूप से पाण्डुलिपि यह कहता होगा, "सूपा में बाहेब से होते हुए हम गुजरे" या "हमने बाहेब में सूपा का मार्ग लिया।" वाक्यांश **अर्नोन की घाटी** इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि "अर्नोन केवल एक अकेली घाटी नहीं थी बल्कि इसमें कई सहायक नदियाँ भी मिलती थी।"[7] मोआब की **आर** नामक नगर की वास्तविक स्थिति अनिश्चित है (देखें 21:28; व्यव. 2:9, 18, 29)।

यह भजन **यहोवा के संग्राम नामक पुस्तक** से उल्लेखित है जिसके बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। पुराने नियम की अधिकांश ऐतिहासिक पुस्तकें बहुधा गैर-केनोनिकल लेखों जैसे "द बुक ऑफ़ जाशार" का उल्लेख करती है (यहोशू 10:13; 2 शमूएल 1:18), जिसको आधुनिक युग में प्रयोग करने के लिए संरक्षित नहीं रखा गया है। इस अध्याय का दूसरा भजन (21:17, 18, 27-30) भी "यहोवा के संग्राम नामक पुस्तक" से उद्धृत है।

आयत 16. अर्नोन नदी के किनारे डाले डेरे से इस्राएली लोग देर तक गए। इब्रानी शब्द בְּאֵר *(बीर)* का अर्थ "कुआँ" है। निस्संदेह इस्राएलियों ने इस स्थान का यह नाम इसलिए दिया था क्योंकि वहाँ उन्होंने **कुआँ** खोदा था। बैर शब्द, बैर-लहैरोई और बेर्शेबा नामक स्थानों पर कुआँ होने के कारण भी स्मरण किया जाता

है (उत्पत्ति 16:7-14; 21:22-34)। बैर में, परमेश्वर ने मूसा से कहा था कि वह **लोगों को इकट्ठा करे** ताकि वह उनको **पानी** दे सके।

आयतें 17-19. गिनती 21:10-20 में उनके यात्रा से संबंधित उद्धरण दूसरा भजन, उनका सफलतापूर्वक **कुआँ** खोदने के उत्सव मनाने से संबंधित है। स्पष्टतया, जब वे खोद रहे थे तो उन्होंने यह भजन गाया, **"हे कुएँ उमड़ आ।"** उनका प्रयास सफल रहा होगा; कार्य करते समय इस भजन के गाए जाने का अस्तित्व, इस तथ्य की गवाही देता है। इस अध्याय में, कुआँ खोदने में इस्राएलियों की सफलता को उनके अच्छे कार्यों की सूची में जोड़ दिया गया होगा।

कुछ लोगों को यह अजीब सा जान पड़ता है कि **हाकिमों** को **अपनी लाठियों से** कुआँ खोदने का श्रेय मिला। इस कारण, इस बात का अनुमान लगाया जाता है कि इस पाठ के शब्दों को अक्षरशः नहीं समझा जाना चाहिए। एक प्रतीकात्मक विश्लेषण यह है कि हाकिमों ने इस परियोजना में अपना भरपूर सहयोग प्रदान किया था, वास्तव में उस कार्य को अन्य लोगों ने पूरा किया था। भजन में रईस उनके हाकिमों के अधिकार का सांकेतिक रूप है। यद्यपि, इस पाठ की शाब्दिक व्याख्या का सरलता से बचाव किया जा सकता है। ऐसा हो सकता है कि हाकिमों ने छिपे कुएँ की खोज की हो; उनके रईसों ने उसमें जमीं गंदगी और कूड़े कचरे या ढकने को सफलतापूर्वक हटाया हो। दूसरी संभावना यह है कि हाकिमों ने अपने रईसों से उथले कुएँ को खुदवाने में सहायता ली हो; वे उस स्थान पर रहे होंगे जहाँ जल स्तर अधिक गहरा नहीं रहा होगा।

इस्राएलियों के यात्रा की अंतिम पड़ाव में अन्य तीन अनिश्चित स्थानों का वर्णन किया गया है। **मत्ताना** की पहचान आधुनिक खीर्बीत एल-मेदीयीनेह से की गई है जो दीबोनगाद से लगभग ग्यारह मील की दूरी पर उत्तर-पूर्व दिशा में स्थित था (देखें 33:46)। **नहलीएल** का अर्थ "परमेश्वर की नदी" है। कुछ लोगों ने इसकी पहचान वालेह नदी, जो अर्नोन नदी की सहायक नदी है, से की है, जबकि अन्य लोगों ने इसकी पहचान जेरका-मैन से की है जो अर्नोन नदी से लगभग ग्यारह मील की दूरी पर उत्तर में स्थित था। **बामोत** का संबंध "ऊँचे स्थानों" से है। यह वही स्थान हो सकता है जिसका वर्णन 22:41 में "बाल देवता के लिए ऊँचे स्थान" के रूप में किया गया है।

आयत 20. अंत में, इस्राएली लोग **उस तराई में पहुँचे जो मोआब के मैदान में स्थित था**। इस क्षेत्र का नाम मोआब इसलिए पड़ा क्योंकि इस क्षेत्र पर मूल रूप से मोआबियों का आधिपत्य था। इस समय, यद्यपि, इस क्षेत्र पर अब एमोरियों का अधिकार था (21:26)। इस क्षेत्र को **पिसगा के उस सिरे तक भी जो यशीमोन की ओर झुका है**, से संबंधित किया गया है।

गिनती 21:10-20 में वर्णित इस्राएलियों के मार्ग का सारांश इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:

- होर पहाड़ से ओबोत तक (21:10),
- ओबोत से मोआब के पूर्व अबारीम तक (21:11),

- अबारीम से जेरेद नाम नाले तक (21:12),
- जेरेद नदी से मोआब की सीमा रेखा में स्थित अर्नोन नदी की दूसरी छोर पर डाले गए डेरे तक (21:13),
- अर्नोन नदी की डेरे से बैर तक (21:16),
- बैर से मत्तानाह तक (21:18),
- मत्तानाह से नहलीएल तक (21:19a),
- नहलीएल से बामोत तक (21:19b),
- बामोत से मोआब की तराई तक (21:20)।

एमोरियों के राजा सीहोन पर विजय (21:21-32)

[21]तब इस्राएल ने एमोरियों के राजा सीहोन के पास दूतों से यह कहला भेजा, [22]"हमें अपने देश में से होकर जाने दे; हम मुड़कर किसी खेत या दाख की बारी में न जाएँगे; न किसी कुएँ का पानी पीएँगे; और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाएँ तब तक सड़क ही से चले जाएँगे।" [23]तौभी सीहोन ने इस्राएल को अपने देश से होकर जाने न दिया; वरन् अपनी सारी सेना को इकट्ठा करके इस्राएल का सामना करने को जंगल में निकल आया, और यहस को आकर उनसे लड़ा। [24]तब इस्राएलियों ने उसको तलवार से मार लिया, और अर्नोन से यब्बोक नदी तक, जो अम्मोनियों की सीमा थी, उसके देश के अधिकारी हो गए; अम्मोनियों की सीमा दृढ़ थी। [25]इसलिये इस्राएल ने एमोरियों के सब नगरों को ले लिया, और उनमें, अर्थात् हेशबोन और उसके आस पास के नगरों में रहने लगे। [26]हेशबोन एमोरियों के राजा सीहोन का नगर था; उसने मोआब के अगले राजा से लड़ के उसका सारा देश अर्नोन तक उसके हाथ से छीन लिया था। [27]इस कारण गूढ़ बात के कहनेवाले कहते हैं: "हेशबोन में आओ, सीहोन का नगर बसे, और दृढ़ किया जाए। [28]क्योंकि हेशबोन से आग, अर्थात् सीहोन के नगर से लौ निकली; जिससे मोआब देश का आर नगर, और अर्नोन के ऊँचे स्थानों के स्वामी भस्म हुए। [29]हे मोआब, तुझ पर हाय! कमोश देवता की प्रजा नष्ट हुई, उसने अपने बेटों को भगेड़ू, और अपनी बेटियों को एमोरी राजा सीहोन की दासी कर दिया। [30]हम ने उन्हें गिरा दिया है, हेशबोन दीबोन तक नष्ट हो गया है, और हम ने नोपह और मेदबा तक भी उजाड़ दिया है।" [31]इस प्रकार इस्राएल एमोरियों के देश में रहने लगा। [32]तब मूसा ने याजेर नगर का भेद लेने को भेजा; और उन्होंने उसके गाँवों को ले लिया, और वहाँ के एमोरियों को उस देश से निकाल दिया।

आयतें 21, 22. इस्राएलियों ने **एमोरियों के राजा सीहोन** से उसके **देश** में **होकर पार जाने** की विनती की (देखें व्यव. 2:26-37), ठीक उन्होंने वैसा ही किया जब वे एदोम देश में से होकर पार जाना चाहते थे (20:14-21)। उन्होंने उसी तरह की प्रतिज्ञा की, **"हमें अपने देश में से होकर जाने दे; हम मुड़कर किसी खेत या दाख की बारी में न जाएँगे; न किसी कुएँ का पानी पीएँगे; और जब तक तेरे**

देश से बाहर न हो जाएँ तब तक सड़क ही से चले जाएँगे।" "राजा का राजमार्ग" एक महत्वपूर्ण मार्ग प्रतीत होता है जो उत्तर में दमिश्क से लेकर दक्षिण में अकाबाह की खाड़ी और अरब तक फैला हुआ था।

आयत 23. हालांकि, राजा **सीहोन** ने उनकी विनती का नकारात्मक प्रत्युत्तर दिया और उनसे **अपनी सारी सेना को इकट्ठा करके इस्राएल का सामना करने को जंगल में निकल आया**। उनका युद्ध स्थल **यहस** था। इस स्थान की वास्तविक स्थिति विवादित है, प्राचीन लेखों के अनुसार यह मेदेबा और दीबोन[8] के बीच स्थित था - दूसरे शब्दों में, यह दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्र था जो एमोरियों के कब्जे में था। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि इस्राएलियों ने अपनी यात्रा समाप्त करने से पहले राजा सीहोन से निवेदन किया था (21:10-20), चूँकि उनका अंतिम पड़ाव यहस से उत्तर की ओर बहुत दूर था। स्पष्टतया, एमोरी राजा के पास दूत तब भेजे गए थे जब उन्होंने उसके दक्षिणी सीमा, अर्नोन नदी को पार कर लिया था। इस क्षेत्र का विवरण "जंगल" करके किया गया है (21:13), और इसका समानान्तर पाठ यह कहता है कि दूत "कदेमोत नाम जंगल" से भेजे गए थे (व्यव. 2:26)।

आयतें 24, 25. युद्ध में परमेश्वर के लोगों का सामना करना राजा को महंगा पड़ा; इस्राएलियों ने **उसको तलवार से मार लिया** और उसके पूरे क्षेत्र को अपने अधिकार में कर लिया, इसलिये इस्राएल ने **एमोरियों के सब नगरों को ले लिया, और उनमें, अर्थात् हेशबोन और उसके आस पास के नगरों में रहने लगे**। संभवतः जैसे गिनती 32 में लिखा है वैसे एमोरियों से लिया गया जमीन पर - रूबेन, गाद, और मनस्सेह का आधा गोत्र - वास्तविक रूप से कालान्तर में ही बसा होगा।

आयत 26. हेशबोन पहले **मोआब के पूर्व राजा** की सम्पत्ति थी लेकिन **एमोरियों** ने इसे अपने **कब्जे** में कर लिया था। तब हेशबोन - उनके **राजा सीहोन का नगर**, एमोरियों की राजधानी था (व्यव. 2:26, 30; 3:6)। बाद में, इस्राएलियों ने हेशबोन पर एमोरियों से विजय प्राप्त कर ली थी (देखें न्यायियों 11:14-23)। रूबेन के वंश ने इस नगर का पुनः निर्माण किया था, यद्यपि यह गाद के क्षेत्र की भी सीमा हुई (32:37; यहोशू 13:15, 17, 24, 26; 21:39)। लेकिन, कालांतर में मोआबियों ने इस नगर पर पुनः अधिकार जमा लिया था (यशा. 15:4; यिर्म. 48:2; देखें 2 राजा 3:4-27)।

आयतें 27-30. इस भाग में एक और भजन पाया जाता है, स्पष्ट रूप से यह उनके लिए था जो **नीतिवचन की पुनरावृति किया करते थे**। यह इस्राएल की देशों पर विजय प्राप्त करने की इतिहास की प्राचीन घटना का वर्णन करता है। भजन यह कहता है कि **सीहोन** ने **मोआब** पर विजय प्राप्त कर ली थी, लेकिन इस्राएल ने **हेशबोन** पर अधिकार जमा लिया था और देश को **नष्ट कर दिया था**। यह भूभाग जिसके बारे में भजन गाया गया है वह अब इस्राएलियों का था। आयतें 27 से 29 उस भजन से उद्धृत है जो **एमोरियों** ने मोआब पर अधिकार प्राप्त करने के पश्चात विजय उत्सव मनाने के लिए रचना किया था। कमोश मोआबियों का मुख्य देवता था, लेकिन वह अपने लोगों को बचाने में सामर्थहीन था: **उसने अपने बेटों को भगेड़ू, और अपनी बेटियों को एमोरी राजा सीहोन की दासी कर दिया**। अंतिम

पंक्ति को इस्राएलियों ने एमोरियों पर अधिकार की अभिव्यक्ति के लिए जोड़ा।

मोआब पर अधिकार को मोआबियों के देवता कमोश पर अधिकार प्राप्त करने के लिए कहा गया है। प्राचीन मध्य पूर्व देशों में जब कोई दूसरे पर अधिकार कर लेता था तो इस सफलता को विजय प्राप्त करने वाले लोगों के देवता(ओं) का, परास्त हुए लोगों के देवता(ओं) पर विजय के रूप में समझा जाता था। एक देवता तब सामर्थशाली समझा जाता था जब उसके मानने वाले युद्ध में विरोधियों को परास्त कर दे।[9]

आयतें 31, 32. सीहोन पर इस्राएलियों की विजय गाथा इन आयतों में पाई जाती है: इस्राएली लोग **एमोरियों के देश में रहने लगे**, उन्होंने **याजेर नगर में अधिकार प्राप्त कर लिया** था और जो एमोरी लोग वहाँ रहते थे उनको वहाँ से **निकाल दिया था**। ये आयतें पूर्वानुमानित हैं, जो यरदन के पूर्व के देशों में (निकट भविष्य में) उनके बसने को दर्शाता है। पहली बार, इस्राएली लोग परमेश्वर द्वारा उनको दिए गए देश पर अधिकार प्राप्त करने लग गए थे और वहाँ बसने लग गए थे। देश के बारे में अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा पूरी होने लग गई थी!

बासान के राजा ओग पर विजय (21:33-35)

[33]तब वे मुड़के बाशान के मार्ग से जाने लगे; और बाशान के राजा ओग ने उनका सामना किया, अर्थात् लड़ने को अपनी सारी सेना समेत एद्रेई में निकल आया। [34]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "उससे मत डर; क्योंकि मैं उसको सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ में कर देता हूँ; और जैसा तू ने एमोरियों के राजा हेशबोनवासी सीहोन के साथ किया है, वैसा ही उसके साथ भी करना।" [35]तब उन्होंने उसको, और उसके पुत्रों और सारी प्रजा को यहाँ तक मारा कि उसका कोई भी न बचा; और वे उसके देश के अधिकारी हो गए।

आयतें 33-35. यह अध्याय इस्राएलियों का एक अन्य राजा: **बाशान का राजा ओग** (देखें व्यव. 3:1-10), पर अधिकार प्राप्त करने की वृतांत के साथ समाप्त होता है। यह राजा उसके भारी भरकम लोहे की चारपाई के लिए स्मरण किया जाता है (व्यव. 3:11)। स्पष्टतया उसका क्षेत्र दक्षिण में याबोक से उत्तर में हर्मोन पर्वत तक फैला हुआ था (व्यव. 3:8-10)। गलील की झील के पूर्वी क्षेत्र "बाशान" एक उपजाऊ क्षेत्र था जो पशुओं के लिए एक अच्छा चरागाह था (देखें भजन 22:12; यहेज. 39:18; आमोस 4:1)।

जब इस्राएली लोगों ने ओग के क्षेत्र में प्रवेश किया तो उसने यार्मुक नदी के तीर पर स्थित अपने एक राजधानी, **एद्रेई** में उनका सामना किया (व्यव. 1:4)। जब परमेश्वर ने मूसा को उत्साहित किया तो इस्राएली लोग ओग के विरूद्ध युद्ध करने निकले और **तब उन्होंने उसको, और उसके पुत्रों और सारी प्रजा को यहाँ तक मारा कि उसका कोई भी न बचा; और वे उसके देश के अधिकारी हो गए।** अल्प समय में ही, इस्राएलियों ने न केवल **सीहोन** और **एमोरियों** के क्षेत्रों पर अधिकार

जमाया, बल्कि उन्होंने बाशान देश पर भी अधिकार जमाया। आधे मनस्सेह के गोत्र को इस क्षेत्र में स्थापित कर यह क्षेत्र भी इस्राएल का एक भाग होना था (32:39-42; व्यव. 3:13)।

गिनती 21 में इस्राएलियों का तीन विजय, परमेश्वर के लोगों के बारे में तीन तथ्य प्रगट करता है:

1. इस्राएल केवल उन देशों के विरूद्ध युद्ध लड़ा जिन्होंने पहले उन पर आक्रमण किया था।
2. जब इस्राएल दूसरे देशों के साथ युद्ध लड़ा तो उनका उद्देश्य शत्रुओं का सम्पूर्ण विनाश करना था। इस अध्याय में जिन आखिरी दो युद्धों का वर्णन किया गया है उसमें विजय का यह तात्पर्य है कि जिन देशों पर उन्होंने विजय प्राप्त की थी उस पर पूरी तरह से अधिकार जमाना था।
3. इस्राएल की विजय परमेश्वर की आशीष व सामर्थ्य के कारण थी (देखें 21:3, 34)।

सीहोन और ओग पर इस्राएल का विजयी होने का यह प्रभाव हुआ कि दूसरे देशों ने, युद्ध में उनकी विजय गाथा सुनकर, उनसे भय खाना सीखा। जब मोआब के राजा बालाक ने "देखा कि इस्राएल ने एमोरियों से क्या क्या किया है," "मोआब इस्राएलियों के कारण अत्यन्त व्याकुल हुआ" (22:2, 3)। कालांतर में, जब इस्राएली लोग यरदन नदी पार करके कनान में प्रवेश करने की तैयारी कर रहे थे, तो यहोशू ने दो भेदियों को उस देश का भेद लेने के लिए भेजा। राहाब ने इन भेदियों को बताया:

> मुझे तो निश्चय है कि यहोवा ने तुम लोगों को यह देश दिया है, और तुम्हारा भय हम लोगों के मन में समाया है, और इस देश के सब निवासी तुम्हारे कारण घबरा रहे हैं। क्योंकि हम ने सुना है कि यहोवा ने तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय तुम्हारे सामने लाल समुद्र का जल सुखा दिया। और तुम लोगों ने सीहोन और ओग नामक यरदन पार रहनेवाले एमोरियों के दोनों राजाओं का सत्यानाश कर डाला है। और यह सुनते ही हमारा मन पिघल गया, और तुम्हारे कारण किसी के जी में जी न रहा; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ऊपर के आकाश का और नीचे की पृथ्वी का परमेश्वर है (यहोशू 2:9-11)।

सीहोन और ओग पर विजय की महत्वता इस बात में देखी जा सकती है कि पुराने नियम में गिनती की पुस्तक के अलावा "सीहोन" का नाम अट्ठाईस बार वर्णित किया गया है (उदाहरण के लिए देखें, व्यव. 2:24, 26, 30, 31, 32; न्यायियों 11:19-21; नहेम्य. 9:22; भजन 135:11; 136:19)।

उनकी विजय ने न केवल लोगों के मन में भय उत्पन्न किया था बल्कि गैर इस्राएलियों को सत्य परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करने में विवश भी कर दिया। यरदन के पूर्व की ओर इस्राएलियों का विजय, इस बात की भी झलक प्रस्तुत करता है कि अभी और क्या कुछ होने वाला है: यह यरदन के पश्चिम के देशों में

विजय, जैसे यहोशू की पुस्तक में वर्णित है, की झलक है।

अनुप्रयोग

अंततः विजय! (अध्याय 21)

जैसे ही अध्याय 20 में इस्राएली लोगों ने प्रतिज्ञा की देश की ओर यात्रा पुनः आरंभ किया, तो उन्हें कई निराशाजनक स्थिति, एवं अपमान का अनुभव करना पड़ा - भीड़ का पाप, जब उन्होंने पानी न होने की शिकायत की, इस्राएल के तीन अगुवों में से दो की मृत्यु और तीसरे का पाप, और एदोम देश का इस्राएलियों को कनान के मार्ग की ओर अपने देश से जाने न देने की अनुमति, इत्यादि संकटों का सामना करना पड़ा था।

दो स्थानों ने इस दुःखभरी स्थिति को कम किया: परमेश्वर ने भीड़ को पानी दिया, जो यह दर्शाता था कि वह अभी भी अपने लोगों के प्रति दयावान है; और हारून के स्थान पर एलीआजर की नियुक्ति लोगों को यह आश्वासन देती है कि याजक पद जारी रहेगा।

इसके बावजूद इस बात की प्रबल संभावना थी कि इस्राएली अभी भी दुःखी थे। वे परमेश्वर की सेना थे। क्या वे कभी युद्ध लड़ेंगे? क्या वे कभी विजय प्राप्त करेंगे? इक्कीसवें अध्याय में हम देखते हैं कि अंततः उन्होंने युद्ध जीत लिया था - लगभग चालीस वर्ष पूर्व अमालेकियों पर विजय प्राप्त करने के पश्चात यह प्रथम विजय थी (निर्गमन 17:8-16)। वस्तुतः, यह अध्याय इस्राएलियों की कई विजय गाथाओं पर रोशनी डालता है। चूँकि हम अपने आत्मिक युद्ध जीतने की चेष्टा कर रहे हैं तो उनकी विजय गाथा हमको उत्प्रेरित करनी चाहिए। इस्राएलियों के विजय में आज हम परमेश्वर के लोग के रूप में अपनी विजय की अनुभव को सार्थक कर सकते हैं। जैसे हम इस्राएलियों की विजय गाथा पर रोशनी डालते हैं, आइये हम उसकी तुलना अपनी विजय की कामना से करें।

इस्राएलियों की विजय गाथाः होर्मा में इस्राएलियों ने कनानियों पर विजय प्राप्त कर ली थी (21:1-3)। इस्राएलियों ने पहले बारह भेदियों की बातों पर प्रतिक्रिया करते हुए परमेश्वर की सहायता बिना कनानियों के देश पर अधिकार प्राप्त करने का प्रयास करते हुए युद्ध में उनका सामना होर्मा में किया था (अध्याय 14)। उस अवसर पर, कनानियों ने अमालेकियों से मिलकर "होर्मा तक वे उन को [इस्राएलियों को] मारते चले आए थे" (14:45)।

लगभग चालीस वर्ष पश्चात, परमेश्वर की सहायता से, इस्राएलियों ने अराद के राजा के आक्रमण का प्रत्युत्तर कनानियों एवं उनके नगरों को नष्ट करके दिया। वे उस शत्रु को जिसने पहले उन्हें पराजित किया था, पर विजय प्राप्त कर उत्साहित हुए होंगे। संभवतः उन्होंने यह पाठ सीखा होगा कि सफलता केवल परमेश्वर की सहायता और उसकी आशीष से ही संभव है। इस अवसर पर वे इसलिए सफल हुए क्योंकि परमेश्वर ने "कनानियों को उनके हाथ में कर दिया था" और उनके बहादुरी के कारण।

दूसरी बात, एक मायने में इस्राएलियों ने मृत्यु पर भी विजय पा ली थी। सबसे पहले गिनती 21:4-9, यह बताता है कि इस्राएलियों ने, होर पहाड़ से कूच करके एदोम देश के चारों ओर चक्कर काटते हुए, अपनी यात्रा कैसे जारी रखी (21:4)। तब यह बताता है कि लोग कैसे बेचैन हुए और यह कहकर "परमेश्वर और मूसा के विरूद्ध बातें की" कि "तुम लोग हम को मिस्र से जंगल में मरने के लिये क्यों ले आए हो? यहाँ न तो रोटी है, और न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दु:खित हैं" (21:4, 5)। परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने विषैले साँप द्वारा कटवाकर उन्हें दण्डित किया (21:6)। जब लोग सहायता के लिए चिल्लाये, तब मूसा ने उनके लिए मध्यस्थता की और जिन लोगों को साँप ने काटा था, उनकी चंगाई के लिए परमेश्वर ने उपाय किया। उसने पीतल के एक साँप को खम्भे पर लटकाने का आज्ञा दी और जो लोग उस पीतल के साँप पर दृष्टि करेंगे वे जीवित रहेंगे (21:7-9)।

यह घटना इतना उत्साहित करने वाली नहीं जान पड़ती है; यह विजय के बजाय पराजय जैसी जान पड़ती है। फिर भी, यह तथ्य कि लोगों को मृत्यु से बचाने का परमेश्वर का उपाय उनके लिए खुशखबरी था। जिसके वे हकदार थे उन्हें वह नहीं मिला, बल्कि उन्होंने उससे भी उत्तम पाया। परमेश्वर का क्षमादान, जो उसके अनुग्रह के द्वारा दिया गया था, ने उन्हें मृत्यु पर जय उपलब्ध कराई थी। जबकि इस घटना ने उन्हें परमेश्वर के विरूद्ध बातें करने का पाठ सिखाया होगा, तो उसी समय इस घटना ने पापी मनुष्य के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह को भी प्रदर्शित किया।

तीसरी बात, गिनती 21 इस्राएलियों का होर पहाड़ से मोआब तक जंगल में सफलतापूर्वक यात्रा का विश्लेषण करता है। ओबोत से कूच करके वे अबारीम से जेरेद नामक नाले तक पहुँचे और फिर वहाँ से वे मोआब पहुँचे। वहाँ से वे एमोरियों के क्षेत्र अर्नोन पहुँचे। वहाँ से वे बैर से मत्ताना, मत्ताना से नहलीएल और नहलीएल से बामोत पहुँचे। यात्रा का यह भाग "पिसगा के उस सिरे तक जो यशीमोन की ओर झुका है पहुँचा" (21:10-20)। बैर में परमेश्वर ने इस्राएलियों को फिर पानी दिया, जो स्पष्ट रूप से मूसा को कुआँ खोदने के लिए निर्देशित करता है। इस अवसर पर लोगों ने भजन गाकर उत्सव मनाया (21:16-18)।

इस यात्रा को कैसे "विजय गाथा" कहा जा सकता है? क्योंकि मिस्र और कनान के बीच की यात्रा में ऐसा कोई घटना नहीं है जहाँ किसी तरह की दुर्घटना न हुई हो। यह यात्रा तो बिना किसी समस्या के समाप्त हो गई होती। फिर, इस्राएल की सफलता परमेश्वर के उपाय के कारण हुई थी। यदि उसने लोगों को पानी न दिया होता तो यह उस घटना की पुनरावृति होता जब इस्राएलियों ने शिकायत की थी और परमेश्वर ने उनको दण्ड दिया था।

चौथी बात, इस्राएलियों ने एमोरियों के राजा सीहोन पर बड़ी सैन्य विजय प्राप्त कर ली थी। सबसे पहले लोगों ने एमोरियों के देश से शांतिपूर्वक तरीके से जाने की अनुमति मांगी। उन्होंने सीहोन को यह कहकर संदेश भेजा, "हमें अपने देश में से होकर जाने दे; हम मुड़कर किसी खेत या दाख की बारी में न जाएँगे; न किसी कुएँ का पानी पीएँगे; और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाएँ तब तक

सड़क ही से चले जाएँगे" (21:22)। "तौभी सीहोन ने इस्राएल को अपने देश से होकर जाने न दिया; वरन् अपनी सारी सेना को इकट्ठा करके इस्राएल का सामना करने को जंगल में निकल आया, और यहस को आकर उनसे लड़ा" (21:23)। इस्राएल ने सीहोन को युद्ध में हराया और उसके देश पर अधिकार प्राप्त कर लिया, "इसलिये इस्राएल ने एमोरियों के सब नगरों को ले लिया, और उनमें, अर्थात् हेशबोन और उसके आस पास के नगरों में रहने लगे" (21:24, 25)।[10] अगला, इस्राएल ने यहस पर भी विजय प्राप्त कर ली थी और "उन्होंने उसके गाँवों को ले लिया, और वहाँ के एमोरियों को उस देश से निकाल दिया" (21:32)। इस समय, इस्राएलियों ने यरदन के पूर्व के देशों पर अधिकार जमाना प्रारंभ कर दिया था।

इन विजय गाथाओं ने लोगों को आनंद मनाने का बड़ा अवसर प्रदान किया। इन विजय गाथाओं ने लोगों को यरदन के पार कनान में जाकर विजय प्राप्त करने का पूर्वावलोकन दिया। परमेश्वर, उन्हें यह विजय दे करके, इस्राएल को उनके बहु प्रतीक्षित प्रतिज्ञा के देश देने की अपनी प्रतिज्ञा प्रारंभ कर रहा था।

पाँचवीं बात, यह अध्याय इस्राएलियों का बाशान के राजा ओग पर विजय पाने का वर्णन करता है (21:33-35)। इस अध्याय में वर्णित दो अन्य सैन्य सफलता की घटना में, ओग का राजा युद्ध में आक्रामक था (21:1, 23, 33)। स्पष्टतया मूसा की योजना (जो परमेश्वर की भी योजना थी) इस्राएलियों को शांतिपूर्ण तरीके से इस देश में से होकर ले जाना था जब तक कि वे उस देश में न पहुँचते जिस पर उनको विजय प्राप्त करना था। तौभी, जिन राजाओं का उन्होंने सामना किया उन्होंने इस्राएलियों का सामना करके उनकी इस योजना को असफल बनाया। इन में से हर एक घटना में परमेश्वर ने अपने लोगों को उन लोगों पर विजय दिलाई जिन्होंने उन पर आक्रमण किया। आज हम कह सकते हैं, "उनके शत्रुओं ने युद्ध आरंभ किया किंतु इस्राएलियों ने उन्हें समाप्त किया!"

सीहोन और ओग पर विजय का एक परिणाम यह था कि इस्राएलियों ने यरदन के पूर्व के देशों पर अधिकार प्राप्त कर लिया था, जो इस्राएल देश का एक भाग हो गया था।

दूसरा परिणाम यह हुआ कि इस्राएलियों की सैन्य बल सब जानने लग गए थे और जिन्होंने इस देश की विजय गाथा सुनी उनके मन में भय उत्पन्न हुआ। उदाहरण के लिए, मोआब के राजा, बालाक को पता चला कि इस्राएलियों ने एमोरियों के साथ क्या किया है और वह इस्राएलियों से भय खाने लगा (22:2, 3)। जब बाद में इस्राएली लोग यरदन नदी पार करके कनान देश में प्रवेश करने की तैयारी कर रहे थे तो दो भेदियों ने राहाब से सुना कि यरीहो के लोगों ने इस्राएलियों का सीहोन और ओग पर विजय की गाथा सुनी थी। राहाब ने भेदियों को बताया कि उनके भय से "उनके मन पिघल गए हैं" और उनका सामना करने को उनके "जी में जी नहीं रहा" क्योंकि उन्होंने जाना कि "परमेश्वर यहोवा ऊपर के आकाश का और नीचे की पृथ्वी का परमेश्वर है" (यहोशू 2:9-11)।

राहाब सही थी। इस्राएलियों ने कुछ विजय प्राप्त की थी और उनका भय माना जाना चाहिए था - उनकी बड़ी सैन्य बल के कारण नहीं, बल्कि उनके परमेश्वर,

केवल एकलौता सत्य परमेश्वर के कारण। सचमुच वह "ऊपर के आकाश का और नीचे की पृथ्वी का परमेश्वर है," वह परमेश्वर जो इस्राएलियों को विजय दिलाने में सामर्थशाली था!

हमारी विजय: एक संदर्भ में, गिनती 21 में वर्णित विजय को हम कैसे अपने विजय के साथ सहभागी कर सकते हैं? मसीही होने के नाते हम निरंतर युद्ध में संलग्न हैं (इफि. 6:12)। हम पाप और शैतान और अंधकार की शक्तियों के विरूद्ध लड़ते रहते हैं। हम निरंतर परीक्षा का सामना करने का प्रयास करते हैं। कभी-कभी हमको लगता है कि परमेश्वर जिस प्रकार का युद्ध हमसे चाहता है उसमें हम हार जाएंगे। कलीसिया के रूप में, हम निरुत्साह हो सकते हैं क्योंकि हम सोचते हैं कि हम बहुत थोड़ा कर रहे हैं या कुछ भी नहीं कर रहे हैं। क्या विजय प्राप्त करना संभव है? इस्राएलियों के समान हमारे लिए इसका उत्तर है "हाँ!" हमें यह विश्वास करना होगा कि हम भी, परमेश्वर की सहायता से जीत सकते हैं!

नया नियम यह घोषणा करता है कि जो शिष्य जय पाते हैं वे अपना प्रतिफल नहीं खोते हैं (प्रका. 21:2, 3), तो हम जानते हैं कि हम विश्वासयोग्य मसीही जीवन जी सकते हैं। पौलुस ने लिखा कि "हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं" (रोम. 8:37)। पहला कुरिंथियों 15:57 में हम पढ़ते हैं, "परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है" (देखें 1 यूहन्ना 5:4, 5)।

इस्राएल के समान, हम परमेश्वर के लोगों के शत्रुओं पर जय प्राप्त कर सकते हैं। जबकि कभी-कभी शत्रु विजय प्राप्त करता हुआ दिखाई देता है, लेकिन अंत में परमेश्वर और जो उसकी ओर हैं, विजयी होंगे! इस्राएलियों के समान, हम अपनी इस जंगल की यात्रा में जिन खतरों का सामना करते हैं, उनसे बच सकते हैं। मसीही होने के नाते, हम भी अपनी प्रतिज्ञा की देश की यात्रा में निकले हैं। हर प्रकार की समस्याएं और खतरे हमें इस यात्रा में डराते है; लेकिन यदि हम परमेश्वर के साथ चलते रहें तो हम उस स्वर्गीय गन्तव्य तक पहुँच सकते हैं (2 तीमु. 4:7, 8)। जो लोग साँप से काटे गए थे, उनके समान हम भी मृत्यु पर जय पा सकते हैं। हमारे पाप के कारण हमको मृत्युदण्ड मिलना चाहिए (रोम. 3:23; 6:23); फिर भी हम मसीह के द्वारा, जो हमारा पाप उठा ले जाता है, पाप और मृत्यु पर जय पा सकते हैं (यूहन्ना 3:14, 15; इफि. 1:7)।

सारांश: कभी-कभी हम सोचते हैं, "कब मैं परमेश्वर की संतान के समान विजयी जीवन अनुभव करना प्रारंभ करूँगा?" निश्चित रूप से कोई भी इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता है। मसीहियों के लिए भी जीवन कठिन व मुसीबत भरा हो सकता है। मसीहियों की सर्वदा परीक्षा की जाती है और वे कभी भी समस्याओं से प्रभावरहित नहीं हो सकते हैं। फिर भी, हम यह जानते हैं कि जो मसीही जीवन जीने का प्रयास करते हैं वे उन समस्याओं से बच जाते हैं जिनका सामना अन्य लोग करते हैं। मसीही प्राथमिकता और नैतिकता दूसरों से अधिक धैर्य धरकर समस्याओं का सामना करने का हमें बल प्रदान करता है। हम में से अधिकांश लोग यह जानते हैं कि अंत में हम जय प्राप्त करेंगे! स्वर्ग में हम अनंतकाल की जय का

आनंद उठाएंगे!

पाप के लिए परमेश्वर का समाधान (21:4-9)

जब किसी देश को राजनीतिक व आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है - जब आतंकवादी आक्रमण करते हैं, देश युद्ध करता है, या अकाल, या बाढ़ की मार पड़ती है - तो लोगों को यह तय कर लेना चाहिए कि वे इन समस्याओं और इनके समाधान के प्रति अति चिंतित न हो जाएं कि वे मानवजाति की सबसे बड़ी समस्या: *पाप!* जिसका वे सामना कर रहे हैं, को भूलें; सब ने पाप किया है; और अपश्चातापी व अक्षम्य पाप, सभी पापियों को नरक भेज देगा जो संसार की सब त्रासदी में सबसे बड़ी त्रासदी है।

पाप और इसके समाधान को पूर्णरूपेण समझने के लिए हमें गिनती 21:4-9 की घटना का अवलोकन करना होगा। इस पाठ में, इस्राएलियों ने सोचा कि अच्छा भोजन व पानी की कमी उनकी सबसे बड़ी समस्या है - लेकिन यह ऐसा नहीं था। वास्तविक समस्या पाप था!

पाप और उसका दण्ड। आइये हम कुछ मुख्य प्रश्न पूछकर इस अनुच्छेद का अवलोकन करें।

1. इस्राएलियों का पाप क्या था? लोग "परमेश्वर के विरुद्ध बात करने लगे, और मूसा से कहा, 'तुम लोग हम को मिस्र से जंगल में मरने के लिये क्यों ले आए हो? यहाँ न तो रोटी है, और न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दु:खित हैं'" (21:5)। लोगों ने शिकायत की। शिकायत करना बुरा क्यों है?

इक्कीसवें अध्याय की घटना में इस्राएल की अधिकांश नई पीढ़ी के लोग थे। यह घटना इस्राएल के चालीस वर्ष की जंगल यात्रा के लगभग अंत में घटा। परमेश्वर के लोग फिर से कूच कर रहे थे, वे प्रतिज्ञा के देश की ओर जा रहे थे। परमेश्वर की सहायता से उन्होंने पहले ही यरदन के पूर्व की ओर रहने वाले लोगों पर विजय प्राप्त कर ली थी (21:1-3)। शीघ्र ही वे दो और राजाओं को पराजित करने वाले थे।

तौभी, उन्होंने यह प्रमाणित कर लिया था कि वे अपने बाप-दादाओं से भिन्न नहीं थे। जिस तरह उनके माता-पिताओं ने बुड़बुड़ाया व शिकायत की थी (11:1-6; 14:1, 2), वे भी बुड़बुड़ाए।

क्या शिकायत करना इतना बुरा है? क्या कभी-कभी सभी लोग शिकायत या खिसियाते नहीं हैं? इस्राएलियों का शिकायत करना उनके विश्वास में कमी दर्शाता है, परमेश्वर पर भरोसा न करना दर्शाता है। लोग परमेश्वर के इरादे व उनके प्रति उसकी अच्छी इच्छा पर प्रश्न चिह्न लगा रहे थे। हमको नए नियम में यह भी बताया गया है: "सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो" (फिलि. 2:14)।

2. इस प्रकार के पापों का दण्ड क्या था? "यहोवा ने उन लोगों में तेज विषवाले साँप भेजे, जो उनको डसने लगे, और बहुत से इस्राएली मर गए" (21:6)। "विषवाले साँप" ("fiery serpents") जिसका अनुवाद NIV में "जहरीले साँप"

("venomous snakes") किया गया, इंगित करता है। उनके काटने से "अग्नि" या " जलन" होता था।[11] इन जहरीले साँपों के काटने से कई लोग मर गए। मृत्यु पाप की सामान्य मजदूरी है। जब इस्राएलियों ने पाप किया, परमेश्वर ने उन्हें एक या दूसरे स्रोत से मृत्यु भेजकर दण्डित किया। यह तथ्य कि "पाप की मजदूरी मृत्यु है" (रोम. 6:23) इस घटना में अच्छी तरह वर्णित किया गया है।

3. लोगों ने इस दण्ड के प्रति कैसे प्रतिक्रिया की? गिनती 21:7 में उन्होंने कहा, "हम ने पाप किया है क्योंकि हम ने यहोवा के और तेरे विरुद्ध बातें की हैं; यहोवा से प्रार्थना कर कि वह साँपों को हम से दूर करे।" लोगों ने अपने पाप के परिणाम का प्रत्युत्तर दुःख, पश्चाताप, और प्रार्थना के द्वारा प्रकट किया। जंगल में अधिकांश समय इस्राएली लोग परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में असफल रहे। तौभी, जेम्स बर्टन कॉफमैन ने पाया कि इस अवस्था में उनके अनुशासन के प्रति प्रत्युत्तर "*एकदम* सही दिशा में था।"[12]

4. परमेश्वर के पास उनकी इस अवस्था का क्या समाधान था? परमेश्वर अपने लोगों के प्रति दयालु व अनुग्रहकारी था। उसने उनको उनके पापों के हिसाब से दण्ड - मृत्युदण्ड, नहीं दिया। उसने उन्हें उनके योग्यता से कहीं बढ़कर प्रतिफल दिया: जीवन या जीवित रहें और अपने पाप के उचित दण्ड से बच जाएं।

इस अवसर पर उनके पाप का समाधान पीतल का साँप था (21:8, 9)। पीतल के साँप को खम्भे पर लटकाये जाने के बाद, "साँप के डसे हुओं में से जिस जिस ने उस पीतल के साँप की ओर देखा वह जीवित बच गया" (21:9)। इस अदभुत चंगाई का बड़ा महत्व है।

परमेश्वर का उपचार आश्चर्यचकित करने वाला और असामान्य था। परमेश्वर ने इससे पहले पाप का समाधान इस प्रकार कभी नहीं उपलब्ध कराया था। जहाँ तक हम जानते हैं, उसने ऐसा कार्य दोबारा नहीं किया। क्यों उसने इस समय ऐसा करने की सोची? हम नहीं जानते हैं। जो हम कह सकते हैं वह यह है कि समाधान की आवश्यकता परमेश्वर पर विश्वास और भरोसा है, न कि "मैं इसे स्वयं कर सकता हूँ" के दृष्टिकोण पर।

परमेश्वर का समाधान उनके पापों के दण्ड से संबंधित था। उनके पापों के कारण ही साँपों ने उनको काटा और अब वे मरने पर थे; परंतु यदि उन्होंने पीतल के साँप की ओर दृष्टि किया तो वे जीवित बचे रहेंगे। यदि वे परमेश्वर पर भरोसा करेंगे और अपने दण्ड की प्रतीक पर दृष्टि करेंगे, तो उनके पाप का परिणाम समाप्त कर दिया जाएगा।

साँप की ओर दृष्टि ही उनके चंगाई का एकमात्र माध्यम था! परमेश्वर ने लोगों को साँप के काटने से बचने के लिए तीन या चार तरीके का सुझाव नहीं दिया। चंगाई प्राप्त करने का केवल एक ही मार्ग था: पीतल के साँप पर दृष्टि करके।

लोगों को देखना था। एक साँप काटे व्यक्ति अपने तम्बू में बैठकर यह कहकर चंगा होने की आशा नहीं कर सकता था, "मैं विश्वास करता हूँ कि यदि मैं पीतल के साँप को देखूँगा तो चंगा हो जाऊँगा।" उसको अपने तम्बू से बाहर निकलकर देखना था! उसको वह कार्य करना था जो परमेश्वर ने चंगा होने से पहले करने को

कहा था।

परिणाम और चंगाई। इस घटना की महत्वता व्यापक है, क्योंकि हम इसमें अपने आपको और इसमें परमेश्वर का हमारे साथ व्यवहार को देखते हैं। पापी इस्राएलियों के इस चंगाई में मानवजाति की सार्वजनिक दुर्दशा का स्पष्ट छाया दिखाई देता है।

1. जैसे लोगों ने तब पाप किया था, वैसे ही हम भी पाप करते हैं; हम सभी पापी हैं (रोम. 3:23; 1 यूहन्ना 1:8, 10)। कई रूपों में हमारे पाप प्रगट होते हैं; लेकिन इसके अंतरात्मा में यह सदैव परमेश्वर पर भरोसा न कर पाने से होता है। यदि हम सचमुच परमेश्वर पर भरोसा रखते - यदि हम यह विश्वास करते कि धर्ममय जीवन जिसका निर्वहन करने के लिए हमें वह कहता है, वह हमारे लाभ के लिए है - तब हम उसके विरूद्ध बलवा नहीं करेंगे।

2. जैसे उन दिनों में इसने किया था, पाप का परिणाम आज भी वैसा ही है। पाप का परिणाम क्या है? मृत्यु! "पाप की मजदूरी मृत्यु है" (रोम. 6:23)। कभी-कभी पाप का परिणाम शारीरिक मृत्यु में है। हमेशा पाप आत्मिक मृत्यु उत्पन्न करता है - पापी का जीवन का स्रोत, परमेश्वर से अलगाव है। अंततोगत्वा, जिस पाप का पश्चाताप न किया गया हो और जिसको क्षमादान न मिला हो, वह मनुष्य को हमेशा की मृत्यु की ओर ले जाता है! हर एक परिस्थिति में, जो मृत्यु पाप के कारण होती है वह इसका उचित परिणाम है।

3. आज, जंगल के समान, परमेश्वर के पास पाप का समाधान है। वह समाधान यीशु मसीह है!

> "और जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए; ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए" (यूहन्ना 3:14-17)।

यूहन्ना ने गिनती की किताब की घटना और हमारी परिस्थिति के बीच सीधी तुलना की है। साँप का ऊँचे पर उठाया जाना ठीक वैसा ही है जैसे मसीह को क्रूस पर उठाया जाना। बहुधा, जब हम पुराने व नए नियम के चरित्रों एवं घटनाओं की "समरूपता" और "प्रतिरूपता" के बीच तुलना करते हैं, तो हम यह स्वीकार करते हैं कि अभिषिक्त लेखकों के मन ऐसी तुलना करने की बात नहीं रही होगी। फिर भी, इस मामले में, हम जानते हैं कि पीतल के साँप का "ऊँचा उठाया जाना" मसीह का प्रतिरूप है क्योंकि बाइबल ऐसा ही कहती है।

हमारे पापों के लिए मसीह, परमेश्वर का समाधान है। आइये हम इस्राएलियों का साँप से काटे जाने की चंगाई और हमारे पाप से छुटकारे के बीच समानता का विश्लेषण करें।

सर्वप्रथम, परमेश्वर का समाधान आश्चर्यचकित करने वाला है। प्रथम सदी के लोगों ने इस बात का पूर्वानुमान नहीं लगाया था कि मसीह की मृत्यु मानवजाति के पाप क्षमा का साधन ठहरेगा। किसी भी व्यक्ति ने इस प्रकार की योजना की कल्पना नहीं की होगी; मसीह की मृत्यु के द्वारा उद्धार को संसार "मूर्खता" समझती है (1 कुरि. 1:18)।

दूसरी बात, परमेश्वर का समाधान, पाप और इसके दण्ड से संबंधित है। यह संयोग से बढ़कर है कि यीशु की तुलना पीतल के साँप से की गई है। यीशु का "ऊँचा उठाया जाना" क्रूस पर हुआ। वहाँ वह "पाप ठहराया गया" (2 कुरि. 5:21)। गिनती की घटना में, साँप, पाप और इसके दण्ड को दिखाता है। क्रूस पर, यीशु ने स्वयं पाप और इसका दण्ड उठाया। क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह, पाप बना (जिसके कारण हमको मृत्युदण्ड मिलता) और मृत्यु का अनुभव किया (पाप के बदले हमको मिलने वाला उचित दण्ड) ताकि हम उसकी ओर देखें और जीवित रहें।

तीसरी बात, उसका समाधान हमारे पापों का एकमात्र प्रभावकारी समाधान है। जैसे उस समय पीतल का साँप इस्राएलियों के लिए अंतिम आशा थी, वैसे ही आज मसीह भी हमारे पापों से बचने का एकमात्र मार्ग है। चाहे हम कैसे भी योजना बना लें - और हम कितने भी अच्छे कार्य कर लें - तौभी संभवतः यह हमें बचा नहीं पाएगी।

चौथी बात, उसका समाधान हमसे कुछ करने को कहता है। जिस तरह इस्राएलियों को "देखना" था, वैसे ही हमें भी "देखना" है। हमारे लिए "देखने" का तात्पर्य क्रूस की परिकल्पना करना नहीं है या यह विश्वास करना कि क्रूस पर मसीह की मृत्यु हमको बचा सकती है, या यह कहना, "हे यीशु! मेरे मन में आइए और मेरा उद्धार कीजिए।" मसीह की ओर "देखने" का अर्थ परमेश्वर पर भरोसा करना है, विश्वास और आज्ञाकारिता से उसकी ओर वैसे ही फिरना है, जैसे प्रथम सदी के लोगों ने जो मसीही हुए थे, किया था। पतरस ने पेन्तिकुस्त के दिन, यीशु को पाप का एकमात्र समाधान के रूप में प्रचार किया था। परिणामस्वरूप "लोगों के हृदय छिद गए" और उन्होंने पूछा कि उन्हें उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए (प्रेरितों. 2:37)। पतरस ने उन्हें पश्चाताप करने और "पापों की क्षमा के लिये … बपतिस्मा लेने" के लिए कहा (प्रेरितों. 2:38)। वस्तुतः, वह उन्हें कह रहा था कि मृत्युदण्ड से बचने के लिए उनको यीशु को अपने उद्धार के लिए "देखना" था।

जब अभिषिक्त प्रेरित ने अपने श्रोताओं को जो करने के लिए कहा तो उन्होंने वैसा ही किया। जिस तरह इस्राएलियों के लिए साँप के काटने से बचने के लिए पीतल के साँप को देखने के अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं था, वैसे ही पेन्तिकुस्त के दिन मसीह से उद्धार पाने के लिए, पश्चाताप और बपतिस्मा के अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं था! पेन्तिकुस्त के दिन कोई भी यूँ ही नहीं कह सकता था, "मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मेरा उद्धार करेगा" और उद्धार पा लेगा। उनको बाहर जाना था और वे बातें करनी थी जो परमेश्वर उद्धार पाने के लिए चाहता था।

उसी तरह, आज कोई भी मसीह, परमेश्वर का पाप के लिए समाधान का

साधन, से उद्धार पाने की आशा नहीं कर सकता है, यदि वह यीशु पर विश्वास करके उसकी ओर नहीं "देखता" है, अपने पापों से पश्चाताप करता है, और पाप क्षमा के लिए बपतिस्मा लेता है। कोई कह सकता है, "मेरे लिए बपतिस्मा लेने का कोई मायने नहीं है। पाप क्षमा का पानी से क्या लेना देना है?" तौभी, हमको यह समझने की आवश्यकता नहीं है कि हमें उद्धार देने के लिए परमेश्वर ने बपतिस्मा क्यों चुना; हमें केवल उसकी आज्ञा मानना है।

उपसंहार। पहला कुरिंथियों 10:9, 10 में, हमसे कहा गया है कि हमको इस्राएलियों के गलती से बचना है: "न हम प्रभु को परखें; जैसा उन में से कितनों ने किया, और सांपों के द्वारा नाश किए गए। और न तुम कुड़कुड़ाएं, जिस रीति से उन में से कितने कुड़कुड़ाए, और नाश करने वाले के द्वारा नाश किए गए।" हमारी सबसे बड़ी समस्या पाप है! अन्य समस्याएं जैसे - आर्थिक समस्याएं, पारिवारिक समस्याएं, एवं अन्य व्यक्तिगत समस्याएं - कठिन हो सकती है, लेकिन पाप सबसे बड़ी समस्या है क्योंकि यह हमें हमेशा-हमेशा के लिए दोषी ठहरा सकता है!

आप पाप की समस्या का समाधान कैसे कर सकते हैं? आप अपने पाप से कैसे छूट सकते हैं? आपको एकमात्र आशा यीशु की ओर फिरना है; जैसे परमेश्वर के वचन में पाया जाता है वैसे ही उसकी ओर फिरें! "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल" (प्रेरितों. 22:16)।

समाप्ति नोट

[1]देखें फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, एण्ड चार्ल्स ए. ब्रिग्गस, *ए हिब्रू एंड इंग्लिश लेक्सिकॉन ऑफ़ द ओल्ड टेस्टमेंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस, 1972), 87. यह शब्दकोष "अथारीम के मार्ग" को "करावान का मार्ग" दर्शाता है और यह तर्क प्रस्तुत करता है कि "किसी स्थानीय स्थान का नामकरण किसी भेदिये के नाम पर नहीं किया जा सकता है।" [2]ब्रेंट ली डोटी, *द बुक ऑफ़ गिनती*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज (जॉप्लीन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1973), 225. [3]रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, द NIV एप्लिकेशन कमेन्ट्री (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 2004), 679. [4]पीतल, तांबा और टीन का मिश्रण है, कभी-कभी इसमें अन्य धातुओं की मात्रा भी पाई जाती है। [5]आर. डेनिस कोले, "नम्बर्स," इन *ज़ोंडर्वन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राउन्ड्स कॉमेन्टरी*, वॉल्यूम 1, *उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण*, एड. जॉन एच. वाल्टन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन, 2009), 375. [6]कैरेन रैंडॉल्फ जॉइन्स, "द ब्रान्ज सरपेंट इन दि इजरालाइट कल्ट," *जॉर्नल ऑफ़ बिब्लिकल लिटरेचर* 87 (सेप्टेम्बर 1968): 251-52. [7]आर. के. हैरिसन, *गिनती: एन एक्सेजेटिकल कमेंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1992), 280. [8]यूसेबियुस *ओनोमास्टीकोन* 131.17; जेरोम *ओनोमास्टीकोन* 262.29. [9]मोआबियों के शीलालेख में थोड़ा भिन्न दृष्टिकोण पाया जाता है। यह इस प्रकार विश्लेषण करता है कि मोआब के देश में इस्राएलियों की उपस्थिति उनके देवता कमोश का उन पर दण्ड का कारण था, जो अपने लोगों से अप्रसन्न था। जब मोआब ने इस्राएलियों को (गाद का यहाँ विशेष रूप से वर्णन किया गया है) अपने देश से बाहर निकाला, तो मेशा राजा ने इस विजय का श्रेय कमोश को ही दिया था (पैट्रीक डी. मिलर, जूनियर, "मोआबाइट स्टोन," *इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडिया,* पुनः संशोधित संस्करण, सम्पादक ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रोमिली [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1986], 3:396.) [10]संभवतः जैसे गिनती 32 में वर्णन किया गया है कि एमोरियों से अधिकार प्राप्त देश में लोग (रूबेन, गाद और मनस्सेह के आधे लोग) बाद में बसे होंगे।

[11]रोनॉल्ड बी. एल्लन, "गिनती," *एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति-गिनती*, संपादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1990), 876. [12]जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमेंट्री आन लैव्यव्यवस्था एण्ड गिनती: द थर्ड एण्ड फोर्थ बुक्स आफ मोजेज* (एबीलीन, टेक्ससः ए.सी.यू. प्रेस, 1987), 453.